कार्ल मार्क्स : एक जीवनी

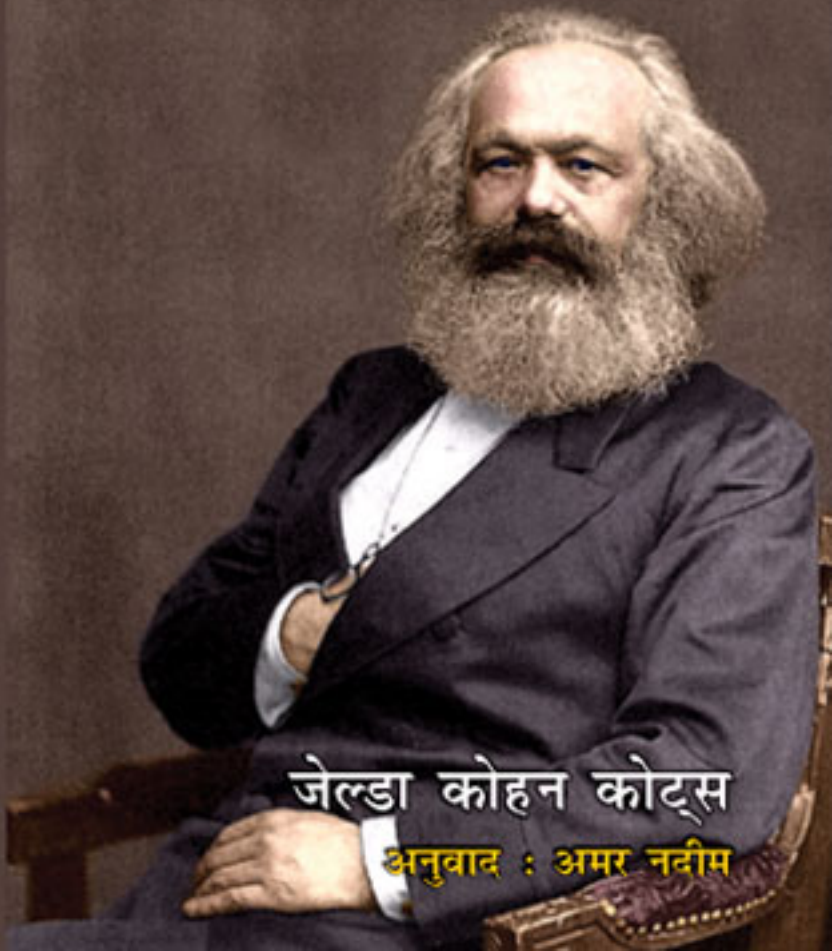

जेल्डा कोहन कोट्स

अनुवाद : अमर नदीम

कार्ल मार्क्स:जीवनी और शिक्षायें

ज़ेल्डा काहान-कोट्स

कार्ल मार्क्स का जन्म 5 मई 1818 को ट्रीव्ज़ में हुआ था। उनके पिता स्थानीय अदालत में एक एक प्रमुख यहूदी वकील और पब्लिक नोटरी थे। वे एक प्रतिभा के धनी ,उच्च-शिक्षा प्राप्त और 18वीं शताब्दी के फ़्रांस के प्रगतिशील विचारों से ओतप्रोत व्यक्ति थे। 1824 में प्रशाई के एक सरकारी फ़रमान के अनुसार सारे यहूदियों के लिये बपतिस्माकरवाना (ईसाई बनना) अनिवार्य कर दिया गया और इस फ़रमान के उल्लंघन का दण्ड था सारे राजकीय पदों/हैसियतों से हाथ धो बैठना। एक स्वतन्त्र चिन्तक और वाल्तेयर के अनुयायी होते हुए भी मार्क्स के पिता ने अपना व्यवसाय छोड़ने और इस तरह अपने परिवार को बरबाद करने की अपेक्षा फ़रमान के आगे समर्पण करने का रास्ता चुना। कार्ल मार्क्स की मां हंगेरियन मूल की एक डच यहूदी महिला थीं जिनके पूर्वज यहूदी धर्मगुरु हुआ करते थे।

कम उम्र में ही कार्ल मार्क्स की प्रखर बौद्धिक सम्भावनायें जाहिर हो गई थीं और सौभाग्य से उनके माता-पिता उनके सांस्कृतिक विकास के लिये सभी प्रोत्साहन और अवसर उपलब्ध कराने में समर्थ थे। उनके पिता ने उन्हें रेसिन और वाल्तेयर पढ़ कर सुनाये और कम उम्र में ही फ़्रांसीसी गौरव-ग्रन्थों से परिचित करा दिया ; और दूसरी ओर उनकी भावी पत्नी के पिता लुडविग वॉन वेस्टफालेन के घर पर उन्होंने होमर और शेक्सपियर से प्यार करना सीखा। श्रमजीवी वर्ग के प्रति उनकी गहरी हमदर्दी , और उनका क्रान्तिकारी उत्साह पूर्णतया तर्क , अन्तर्दृष्टि और अध्ययन पर आधारित थे न कि कोरी भावुकता , वर्गीय संस्कारों या व्यक्तिगत दुखों-कष्टों पर। फिर भी वे कोई भावनाविहीन दार्शनिक, रूखे वैज्ञानिक, या इतिहास की चीर-फाड़ करने वाले निर्लिप्त अध्येता मात्र तो नहीं ही थे। उनके सभी निजी मित्र और उनका अपना जीवन इस बात का प्रमाण देते हैं कि वे अपने समकालीन डार्विन की भांति एक विशेषज्ञ भर नहीं थे अपितु प्रखर प्रतिभाशाली होने के साथ ही साथ मानवीय प्यार,जोश, और कमज़ोरियों से भरपूर एक संपूर्ण मनुष्य थे। एक रोचक तथ्य यह भी है कि उनके प्रारम्भिक साहित्यिक प्रयास कविता के क्षेत्र में थे।

उनकी बेटी एलिनोर बताती हैं कि "मार्क्स के सहपाठी उन्हें प्यार भी करते थे और उनसे भयभीत भी रहते थे- प्यार इसलिये क्योंकि मार्क्स लड़कों की शरारतों मे शामिल होने को हमेशा तैयार रहते थे और भयभीत इसलिये क्योंकि वे चुभती हुई व्यंग कवितायें लिखते थे और अपने विरोधियों का जम कर मखौल उड़वाते थे। "

जीवन भर कविता, कला और संगीत में उनकी गहरी दिलचस्पी बनी रही। होमर, दाँते, शेक्सपियर, सर्वेन्टीज़, बालज़ाक, शेड्रिन, और पुश्किन उनके प्रिय लेखक थे। तत्कालीन जर्मनी के सभी क्रान्तिकारी कवियों- हाइने , फ़ेलीग्राथ, और वीह्ट से तो उनकी व्यक्तिगत मित्रता थी ; मार्क्स ने उन्हें न केवल उनकी अनेक क्रान्तिकारी कविताओं के लिये प्रेरित किया था बल्कि जब वे हाइने के साथ पेरिस में थे तो अक्सर हाइने को अपनी कविताओं की पँक्तियां परिमार्जित करने में सहायता करते थे ; कभी-कभी तो किसी कविता के एक-एक शब्द को लेकर उनके बीच तब तक विचार-विमर्श चलता रहता था जब तक कि पूरी कविता ही स्पष्ट और परिष्कृत न हो जाय। मार्क्स लगभग आधा दर्ज़न भाषायें जानते थे और साहित्यिक फ़्रेंच और अंग्रेज़ी तो मूल भाषा-भाषियों की तरह लिख सकते थे; विज्ञान की प्रगति में भी उनकी गहरी रुचि थी। लीब्कनेख़्त बताते हैं कि जब 1850 में बिजली का पहला इंजन प्रदर्शित किया गया तो मार्क्स कितने जोश से भर गये थे। एंगेल्स ने काफ़ी ज़ोर देकर उस ख़ुशी का वर्णन किया है जो मार्क्स को तब होती थी जब सैद्धान्तिक विज्ञान के क्षेत्र में कोई नई खोज सामने आती थी; यद्यपि' एंगेल्स आगे कहते हैं कि ; ये खुशी उस उल्लास के सामने कुछ भी नहीं थी जो मार्क्स तब अनुभव करते थे जब ऐसी खोज तत्काल ही उद्योगों मे प्रयुक्त भी होकर सामाजिक विकास में योगदान करने लगती थी। जब 1859 में डार्विन की ऑरिजिन ऑफ़ स्पेसीज़ प्रकाशित हुई तभी, बल्कि उससे पहले ही मार्क्स ने डार्विन के काम के युगान्तरकारी महत्व को पहचान लिया था और महीनों तक जर्मन प्रवासियों के बीच डार्विन के अतिरिक्त और किसी विषय की चर्चा ही नहीं हुई।

ये उल्लेख हम मार्क्स के बहुआयामी व्यक्तित्व प्रकाश डालने के अतिरिक्त इस प्रचलित धारणा के खण्डन के लिये भी कर रहे हैं कि मार्क्स एक "रूखे-सूखे" अर्थशास्त्री भर थे। मार्क्स की कृतियों के बारे में हम आगे चल कर चर्चा करेंगे, पर यहां इतना तो कहा ही जा सकता है कि यद्यपि मार्क्स भी अर्थशास्त्रीय विज्ञान को एकदम सरल तो नहीं बना सकते थे फिर भी विषय के अपेक्षतया अधिक औपचारिक पहलुओं की चर्चा भी उन्होंने वैसे नीरस ढंग से नहीं की जैसे कि पुराने अर्थशास्त्रियों ने।

"पूँजी" तक के ऐतिहासिक अनुच्छेद भी मानवीय संवेदना और समझ से भरपूर हैं; दृष्टान्त इतने उपयुक्त हैं, व्यंग इतना सहज और सटीक, कि औसत बुद्धिमत्ता और सामान्य प्राथमिक शिक्षा वाले किसी मजदूर को भी उनकी रचनाओं के अध्ययन से घबराने की आवश्यकता नहीं है; बशर्ते कि उसमें एकाग्रचित्त होने की क्षमता और सीखने की लगन हो।